• पूजा-पाठ...

धनतेरस...

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को धनतेरस का त्योहार मनाया जाता है। इस साल धनतेरस 13 नवंबर को मनाया जाएगा। इस दिन पीतल या चांदी के बर्तन खरीदने की परंपरा है। मान्यता है कि इस दिन जो भी खरीदा है, वह लाभकारी होता है। साथ ही धन-संपदा में भी वृद्धि होती है। धनतेरस पर खरीदारी के साथ शुभ कार्य भी किए जाते हैं। इस दिन विशेष रूप से सोने और चांदी के आभूषण खरीदना शुभ होता है। जानिए धनतेरस के दिन किन चीजों की खरीदारी करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

▶ कहते हैं कि धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि की कृपा पाने के लिए कुबेर यंत्र और महालक्ष्मी यंत्र खरीदना चाहिए। मान्यता है कि ऐसा करने से जीवन में सुख-समृद्धि के साथ वैभव आता है। श्रीयंत्र को घर को घर या दुकान की तिजोरी में स्थापित करें।

▶ दिवाली बाद तुला राशि वालों के लिए खुशखबरी ला रहे हैं शुक्र, जानें राशि परिवर्तन का आपके जीवन पर क्या पड़ेगा प्रभाव

▶ धनतेरस पर लक्ष्मी-गणेश जी की मूर्ति स्थापित करना शुभ होता है। कहते हैं कि दिवाली के पहले धनतेरस पर लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति लाना शुभ होता है।

▶ धनतेरस पर सोने या चांदी के सिक्के खरीदना शुभ होता है। इसके अलावा चांदी के बर्तन भी खरीदे जाते हैं। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, धनतेरस के दिन खरीदे जाने वाले गहने, सिक्कों, बर्तनों की भी दिवाली के दिन गणेश-लक्ष्मी पूजन के दौरान पूजा करनी चाहिए। कहते हैं कि ऐसा करने धन की देवी मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

▶ धनतेरस पर धनिए के बीज की खरीदारी को शुभ माना जाता है। कहते हैं कि धनिए के बीज का इस्तेमाल गणेश-लक्ष्मी पूजन में करना चाहिए। साथ ही धनिया का बीज तिजोरी में भी रखना शुभ होता है।

▶ धनतेरस पर लोहे की वस्तुओं की खरीदारी नहीं करनी चाहिए। लोहा शनि का कारक माना गया है। मान्यता है कि धनतेरस पर लोहे की चीजों को खरीदने से दुर्भाग्य आता है। इसके अलावा धनतेरस के दिन चीनी मिट्टी की बनी हुई चीजों को भी नहीं खरीदना चाहिए। कहते हैं कि ऐसा करने से घर में बरकत कम होती है।

• संतान के लिए...

अहोई अष्टमी व्रत...

अहोई अष्टमी का व्रत कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन रखा जाता है। अहोई अष्टमी का व्रत करवा चौथ व्रत के चार दिन बाद पड़ता है। इस दिन अहोई माता और पार्वती मां की पूजा की जाती है। अहोई अष्टमी का व्रत माताओं द्वारा अपनी संतान के लिए भोर से सांझ तक रखा जाता है। इस दिन की खासियत ये है कि यह व्रत तारों को देखने के बाद तोड़ा जाता है। संतान के लिए रखा जाने वाला यह व्रत उत्तर भारत में काफी लोकप्रिय है। अहोई अष्टमी का व्रत भी निर्जला रखा जाता है।

अहोई अष्टमी व्रत की तिथि- 8 नवंबर, 2020 (रविवार)
अहोई अष्टमी पूजा मुहूर्त-17:31 से 18:50 अष्टमी
तिथि प्रारंभ-नवंबर 08, 2020 को 07:2 9 बजे अष्टमी
तिथि समाप्त- नवंबर 09, 2020 को 6:50 बजे

अहोई अष्टमी पूजा विधि अहोई अष्टमी का व्रत रखने वाले जातक को सबसे पहले स्नानादि के बाद साफ वस्त्र धारण करें और व्रत का संकल्प लें। अब अपने मंदिर की दीवार पर गेरू और चावल की मदद से अहोई माता और उनके सात पुत्रों की तस्वीर बनाएं। यदि आपके लिए ऐसा करना संभव न हो तो आप आप बाजार से अहोई माता की फोटो भी ला सकते हैं। अहोई माता यानी पार्वती मां के सामने एक पात्र में चावल भरकर रख दें। इसके साथ ही मूली, सिंघाड़ा या पानी फल रखें। माता के सामने एक दिया जलाएं। अब एक लोटे में पानी भरकर रखें और उसके ऊपर आप करवा चौथ में इस्तेमाल किया गया करवा रख दें। दिवाली के दिन इस करवे के पानी का छिड़काव पूरे घर में किया जाता है। अब आप अपने हाथ में गेहूं या चावल लेकर अहोई अष्टमी व्रत की कथा पढ़ें। व्रत कथा पढ़ने के बाद मां अहोई की आरती करें और पूजा के समापन के बाद उस चावल को अपने दुपट्टे या साड़ी के पल्लू में बांध लें। शाम को अहोई माता की एक बार फिर पूजा की जाती है। आप माता को भोग चढ़ाएं और लाल रंग के फूल चढ़ाएं। शाम को अहोई अष्टमी व्रत कथा पढ़ें और आरती करें। सांझ के समय में तारों को अर्घ्य दें। करवे का सारा पानी इस्तेमाल न करें। उसमें थोड़ा जल जरूर बचा लें ताकि उसका छिड़काव दिवाली के दिन कर सकें। अहोई अष्टमी व्रत का महत्व उत्तर भारत में करवा चौथ व्रत के बाद महिलाओं के लिए अहोई अष्टमी व्रत का काफी महत्व है। जिस तरह से करवा चौथ का व्रत महिलाएं अपने पति की लंबी आयु के लिए रखती हैं, उसी तरह अहोई अष्टमी का व्रत संतान की लंबी उम्र और उनकी मंगल कामना के लिए करती हैं। निसंतान दंपत्तियों के लिए यह व्रत काफी मायने रखता है। संतान प्राप्ति की इच्छा के साथ महिलाएं ये व्रत करती हैं।

• संयोग...

पुष्य नक्षत्र...

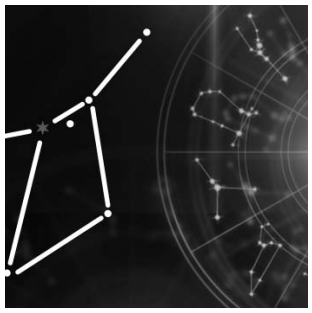

दीपावली के 7 दिन पूर्व शुभ संयोग एवं मुहूर्त बन रहा है। नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र को शुभ एवं पुण्यदायक नक्षत्र माना जाता है। इस बार दीपावली के एक सप्ताह से पूर्व 7 नवंबर दिन शनिवार को पुष्य नक्षत्र को भोग सम्पूर्ण दिन होगा। पुष्य नक्षत्र का मान 7 नवंबर को सूर्योदय पूर्व से रात में 4:59 बजे तक होगा। पुष्य नक्षत्र के शुभ काल में खरीद-फरोख्त ,उद्योगों एवं व्यापार की शुरुआत, बहुत शुभ मानी जाती है। इस नक्षत्र में अशुभ काल में शुभ काल में बदलने की क्षमता होती है। शनि देव इस नक्षत्र के स्वामी भी है और यह नक्षत्र शनिवार को पूरा दिन व्याप्त होगा। ऐसे में इसका व्यापारिक महत्त्व बढ़ जाता है। इस बार ग्रहों की स्थिति भी अति उत्तम है जहां शनि देव मकर राशि मे स्वगृही है, गुरु स्वगृही है, बुध एवं शुक्र राशि परिवर्तन राजयोग में है , बुधादित्य राजयोग के साथ साथ चंद्रमा भी स्वगृही स्थिति में रहेंगे ऐसे में यह समय अत्यंत श्रेष्ठ एवं शुभफलदायी है। तिष्य और अमरेज्य जैसे अन्य नामों से भी पुकारे जाने वाले इस नक्षत्र की उपस्थिति कर्क राशि के 3-20 अंश से 16-40 अंश तक है। अमरेज्य का शाब्दिक अर्थ है, देवताओं के द्वारा पूजा जाने वाला। शनि इस नक्षत्र के स्वामी ग्रह हैं। इसी कारण विवाह को छोड़कर अन्य सभी मांगलिक कार्यों की शुरूआत शुभफल दायक होती है।

• शुभ योग...

अपने पुत्र संतान की लंबी आयु एवं सुख-समृद्धि के लिए ताएं मां अहोई अष्टमी का व्रत रखेंगी। कहा जाता है कि फल पुत्र संतान के प्रतीक होते हैं इसलिए माताएं इस दिन दूध पीना एवं फल खाना वर्जित मानती हैं। इसलिए निराहार एवं निर्जला व्रत माताएं अपने पुत्र की खुशी के लिए करती हैं। शाम को तारा उदय होने पर इस व्रत का समापन होता है। तारा देख उसको अर्घ्य देकर माताएं अपना व्रत का समापन करती हैं। माना जाता है कि चंद्रमा पति कारक और तारे पुत्र कारक होते हैं। अहोई अष्टमी का पर्व प्रातः रवि पुष्य योग से आरंभ होगा और पूरे दिन सौम्य योग के साथ मनाया जाएगा।